जुलाई 2017

वर्ष 29 द्वादश अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 तथ्यों को जानो और जीओ

विशेष स्तम्भ

10 समसामयिक सामान्य ज्ञान
16 आर्थिक परिदृश्य
20 राष्ट्रीय परिदृश्य
24 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
31 क्रीड़ा जगत्
33 मुम्बई इण्डियंस तीसरी बार आईपीएल की विजेता
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 सारभूत तत्व कोष
40 विज्ञान समाचार
42 युवा प्रतिभाएं

लेख

45 डिजिटल इण्डिया
48 सामयिक लेख—परमाणु आतंकवाद का खतरा
49 अन्तरिक्ष लेख—कामयाबी के नए दौर में इसरो
50 गणितीय लेख—अनुपात एवं समानुपात
53 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड, सहायक स्टेशन मास्टर परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न : मनोवैज्ञानिक एवं अभिरुचि परीक्षण

हल प्रश्न-पत्र

56 रेलवे भर्ती बोर्ड गैर-तकनीकी (एनटीपीसी) परीक्षा, 2016
65 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकेण्डरी (10+2) लेवल परीक्षा, 2016
72 मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक (जी.डी.) परीक्षा, 2016
79 मध्य प्रदेश सब-इंस्पेक्टर पुलिस भर्ती परीक्षा, 2016
90 डाक विभाग (राजस्थान) पोस्टमैन/मेलगार्ड परीक्षा, 2016

आगामी आईबीपीएस द्वारा आयोजित बैंक लिपिकीय संवर्ग (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

97 तर्कशक्ति परीक्षा
100 संख्यात्मक क्षमता
103 English Language

आगामी बिहार शिक्षक पात्रता परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

106 प्रथम प्रश्न-पत्र : कक्षा I से V तक
114 द्वितीय प्रश्न-पत्र : कक्षा VI से VIII तक

विविध/सामान्य

125 वार्षिक रिपोर्ट 2016-17–सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण: पर्यवलोकन
128 ज्ञान वृद्धि कीजिए
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

तथ्यों को जानो और जीओ

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश, सुख-दुःख चिरस्थायी भाव हैं. एक का अस्तित्व तभी है जब दूसरा हो.

महत्वाकांक्षी होना कुछ हद तक तो अच्छी बात है, परन्तु खुद से अधिक अपेक्षाएं रखना, खुद को परिपूर्ण बनाने के लिए अत्यधिक व्यग्र (Stressed) रहना. एक बीमारी से कम नहीं है, अगर आप विगत सालों में अच्छा परिणाम लाए, सदा सफलता का सेहरा पहनते आए, किन्तु अब अगर ऐसा न होने के कारण परेशान रहते हो, तो जरा सोचो, खुद पर उम्मीदों का बोझ लादकर जीना, भला कहाँ की समझदारी है. खुद को सम्यक् (Balanced) रखना सीखो. न स्वयं को असफल (Failure) मानो, न हताश बनो, न ही खुद को हीरो या परिपूर्ण बनाने की धुन में अवसाद (Dipression) के शिकार ही बनो.

एक महत्वाकांक्षी प्रतिभाशाली विद्यार्थी, जो अब तक लगातार अपनी पढ़ाई में अव्वल रहा था, C.A. Enter होने के बाद दो-तीन बार फेल हो गया. अब उसको अपनी पढ़ाई से नफरत होने लगी, वह डिप्रेशन में रहने लगा, खुद को नाकाबिल मानने लगा, ऐसे में किसी दिन हम ने उसे समझाया कि आप स्वयं को नाकाबिल क्यों मान रहे हो, क्योंकि आज तक खुद को बहुत काबिल मानते आ रहे हो. क्यों खुद को कभी श्रेष्ठतर मानते हो. कभी तुच्छ आप खुद को देखो. खुद को जानो, किन्तु कुछ भी मानो मत, कोई स्थायी मान्यता मत बनाओ. C.A. की पढ़ाई को इतना भी तवज्जो न दो कि उसके आगे तुम्हें खुद को नफरत होने लग जाए. आदमी को हर समय खुद के हालातों से खुद को आँकना नहीं चाहिए. चाहे आप विद्यार्थी हो या व्यवसायी; सफलता-असफलता, लाभ हानि सदा आनी-जानी है. जीवन के एक महत्वपूर्ण तथ्य (Fact) को जानो कि यहाँ तीन जोड़े शाश्वत रूप से एक-दूसरे की वजह से मौजूद ही रहते हैं.

प्रथम जोड़ा (युगल) है—जीवन-मरण का. अगर हम जीवित हैं, तो मात्र इसीलिए जीवित रह सकते हैं क्योंकि कई सारे अन्य प्राणी हमारे जीवन के लिए मर रहे हैं. वे मृत्यु को प्राप्त कर रहे हैं, उनके आधार पर हम जीवित हैं. जैसे हमारा भोजन, पानी, श्वासोच्छ्वास-ये सब उन सूक्ष्म प्राणियों की कुर्बानी से सम्भव हो रहा है, जो आज वृक्ष रूप है, जल रूप है, अग्नि रूप है, वायु रूप है व पृथ्वी के कण रूप में है. कीट-पतंगों व अन्य विकल इंद्रिय जीवों के रूप में है. जब समष्टि के असंख्य जीव काल के ग्रास बनते हैं, तो हम जीवित रह पाते हैं ठीक इसी तरह हमारा जीवन भी कितने ही जीवनों को जीवित रखने के लिए उपयोगी है. सार्थक है ? हर जीवन मृत्यु पर टिका है, हर मृत्यु नवजीवन की भूमिका है. ये एक तथ्य है, जिसे हम जानें या न जानें, मानें या न मानें, किन्तु ऐसा ही है, इसका उल्लंघन सम्भव नहीं है. इसीलिए जीवन-मरण को आवश्यक जीओ, जाग्रत जीओ. आभारयुक्त जीओ, सप्रेम जीओ, ताकि दोनों ही सार्थक बनते जाएं. चाहे हम जीएं या मरे अथवा हमारे लिए अन्य कोई हर कोई अर्थक्ता पाए, ऐसी कला को सीखो. वह कला है प्रेम ज्ञान, आभार दान.